यह सीरिया नहीं, भारत की तस्वीर है! दृश्य ऐसा कि हैवानियत भी शर्मिंदा हो जाए

रवीश कुमार

इसके पहले फ्रेम में सात पुलिस वाले दिख रहे हैं। सात से ज़्यादा भी हो सकते हैं। सभी पुलिसवालों के हाथ में बंदूकें हैं। सबने बुलेट प्रूफ जैकेट पहन रखे हैं। तरह-तरह की आवाज़ें आ रही हैं। तड़-तड़ गोलियों के चलने की आवाज़ें भी आ रही हैं। कैमरे का फ्रेम थोड़ा चौड़ा होता है। अब सात से अधिक पुलिस वाले दिखाई देते हैं। गोली की आवाज़ तेज़ हो जाती है। एक पुलिसवाला हवा में गोली चला रहा है।एक के हाथ की बंदूक नीचे है। एक पुलिसवाला सीने की ऊंचाई के बराबर गोली चला रहा है। दूसरी तरफ से दो तीन पुलिस वाले भागे आ रहे हैं। उनके आगे एक आदमी भागा आ रहा है। वह ढलान से उतरता हुआ तेज़ भागा आ रहा है लेकिन सामने से पुलिस वाले भी तेज़ी से उसकी तरफ बढ़े जा रहे हैं। अब वीडियो के फ्रेम में कई पुलिस वाले दिखाई देते हैं। एक पुलिस वाला उस आदमी पर बंदूक ताने दिखता है। एक लाठी उठाए दिखता है। कुछ और पुलिस वालों के हाथ में लाठियां हैं। भागने वाले आदमी के हाथ में भी लाठी दिख रही है। गोलियों के चलने की आवाज़ आती जा रही है। निहत्था भागता आया आदमी नीचे गिरा दिखता है। यहां तक वीडियो के 9 सेकेंड हो चुके हैं। सिर्फ 9 सेकेंड में आप इतना कुछ होते देखते हैं। जितना कुछ खुद को दिन रात महान और सहिष्णु बताने वाले इस मुल्क को आप कई हज़ार साल में नहीं देख पाते हैं।

अब अगले छह सेकेंड में जो दिखता है वह भयावह है। आपके लिए जो क्रूरता और बर्बरता है, वह किसी के लिए संवैधानिक कर्तव्य हो सकता है। संविधान जिसने सबको बराबर माना है। वीडियो के 9 से 15 सेकेंड के बीच कई पुलिस वाले उस गिरे हुए और मरे हुए आदमी पर टूट पड़ते हैं। लाठियों से मार रहे हैं। गोलियों के चलने की भी आवाज़ें आ रही हैं। लोगों की आवाज़ें भी आ रही हैं। सब कुछ मिटा देने की इस कार्यवाही में एक कैमरा है जो इस पूरे प्रसंग को मिटने से बचा रहा है। सभी गतिविधियों को रिकार्ड कर रहा है। वही कैमरा ज़रा और खुलता है या कहिए कुछ पुलिस वाले कैमरे के सामने से हट जाते हैं।

एक लड़का सा दिखाई देता है। वह वर्दी में नहीं है। उसके कंधे से बेल्ट के सहारे एक बैग लटका है। गर्दन में उसने सफेद और लाल रंग का गमछा लपेटा है। यह गमछा असम की पहचान है। इस लड़के के हाथ में एक कैमरा भी है। यहां तक वीडियो के 26 सेकेंड हो गए हैं। मैंने पॉज़ कर दिया था ताकि पुलिस और उस लड़के की बर्बरता को एक एक फ्रेम में देख सकूं। बिना वर्दी वाला वह लड़का लाश की तरफ तेज़ी से दौड़ता हुआ जाता है और मरे हुए उस आदमी की छाती पर कूद जाता है। काफी ऊंचाई से कूदता है। मैंने ओलिंपिक में इसी तरह किसी को कूदते देखा था। नाम याद नहीं। किसे देखा था। कूदने के बाद वह लड़का तेज़ी से कैमरे की तरफ़ मुड़ता है। तभी एक सिपाही उस मरे हुए आदमी पर ज़ोर से डंडे मारता है। मरा हुआ आदमी कोई प्रतिकार नहीं करता है। मरा हुआ आदमी मरे हुए आदमी पर वार करता है। कैमरे वाला लड़का खुद को संभालता है और इस बार गर्दन पर कूदता है। थोड़ा आगे आता है और फिर से मुड़ कर मरे हुए व्यक्ति की तरफ पहुंचता है और इस बार मुक्के से उसकी छाती पर मारता है। एक बार और मुक्के से मारता है। एक पुलिसवाला उसे ऐसा करने से रोकता है। वहां से हटाता है। यहां तक वीडियो के 35 सेकेंड हो चुके हैं ।

अब सारे पुलिसवाले कैमरे के फ्रेम से हट जाते हैं। इतना सब कुछ हो चुका है लेकिन रिकार्ड करने वाले कैमरे को थामने वाला हाथ नहीं कांपता है। स्थिर है। गोलियों के चलने की आवाज़ें आ रही हैं। बहुत से लोगों के हल्ला करने की भी आवाज़ पीछे से आ रही है। एक लाश पड़ी दिखाई देती है। जैसे वह गिरने से पहले सावधान मुद्रा में होने का अभ्यास कर रही हो। एक दूसरा आदमी लाश की तरफ बढ़ता दिखाई दे रहा है। उसने जीन्स की पतलून पहनी है। पूरी बांह की कमीज़। वर्दी वाला नहीं है। रिकार्डिंग वाला है। उसके कंधे से भी एक बैग लटका है। जो कैमरा इन सबको होता हुआ रिकार्ड कर रहा है वो तेज़ी से लाश की तरफ बढ़ता हुआ लाश पर जाकर रुक जाता है। मैंने पॉज़ कर दिया है। 46 सेकेंड हो चुके हैं। प्ले कर देता हूं।

जिस व्यक्ति की मौत अब हर तरह के संदेह से परे हो चुकी है, उसने बनियान पहनी है। पुलिस के साथ भागा भागी में कुर्ता कहीं रह गया या वह बनियान में ही घर से निकला होगा। उसकी छाती पर चूड़ी बराबर गोलाई दिख रही है। जिसमें किसी ने लाल रंग भर दिया है। लगता है गोली छाती में सुराख़ बनाती हुई पार निकल गई है। खून के छींटें भी दिखाई नहीं दे रहे हैं। गोली ने उतना ही सुराख़ किया है जितना उसे मारने के लिए ज़रूरी होगा। खून के गोल धब्बे के अलावा बनियान एकदम साफ और सुरक्षित है। किस कंपनी का बनियान है, दूर से पता नहीं चलता है। उसकी लुंगी ऊपर तक मुड़ी है। हरे रंग की है। बायें पांव में रक्त के निशान हैं। सर के पास एक गमछा गिरा है। यहां तक वीडियो के 52 सेकेंड हो चुके हैं।

जैसे ही 54 सेकेंड होता है, अचानक वही बंदा तेज़ गति से दौड़ता आता है और मरे हुए इंसान की छाती पर ज़ोर से कूद जाता है। इतनी ज़ोर से कूदता है कि खुद दूर जा गिरता है। वह फिर से वापस आता है और ज़ोर से उसकी छाती पर मुक्का मारता है। उसे रोकने जैसी आवाज़ें आ रही हैं। यहां तक वीडियो के 59 सेकेंड हो चुके हैं। एक पुलिस वाला लाश पर कूद कूद कर लात और मुक्का मारने वाले को हटा कर दूर ले जा रहा है। लाश अकेले में पड़ी है। 1 मिनट 12 सेकेंड हो चुका है।

इस 1 मिनट 12 सेकेंड के वीडियो को देखा जा सकता है। मुझे लगा कि मैं नहीं देख सकूंगा। आप भी देख सकते हैं। आए दिन आप इस तरह के वीडियो देखते रहते होंगे।

जिसमें लोग एक दूसरे को मार रहे हैं। पुलिस लोगों को मार रही है। आप पहले से ही मरे हुए हैं। आपको पता नहीं चलता है कि पुलिस देखने वालों को मार रही हैं। बता रही है कि इस तरह से मारे जाने की बारी किसी की भी आ सकती है।

वीडियो में जिस लाश को आपने देखा है, असम पुलिस के अनुसार वह एक बुजुर्ग से 75,000 रुपये छीन कर भाग रहा था। पुलिस ने पकड़ लिया लेकिन पुलिस की हिरासत से भी भाग निकला। तभी पुलिस को गोली चलानी पड़ी। उसे नागांव सिविल अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया। पुलिस ने 56000 रुपये बरामद कर लिए हैं।

यह सारी जानकारी समाचार एजेंसी पीटीआई से मिली है। पुलिस का बयान ज़रूरी होता है। आपने वीडियो में जो देखा वह झूठ भी हो सकता है। सच बोलने का लाइसेंस केवल पुलिस के पास है।

इस देश में अदालत है। कई तरह की अदालतें हैं। कानून है। कानून की प्रक्रिया है। आप सभी ऐसा ज़रुर मानें। जैसा पुलिस कहे, वैसा ही मानिए। वर्ना 1 मिनट 12 सेकेंड से कम के वीडियो में आप निपटा दिए जाएंगे। ये विश्व गुरु भारत है।

मैंने वीडियो साझा नहीं किया है। महान फेसबुक के सामुदायिक नियमों को तोड़ना ठीक नहीं है। जब संवैधानिक नियमों को इस तरह तोड़ा जा रहा है तब फेसबुक के सामुदायिक नियमों की रक्षा में ही सबकी रक्षा है। आइये हम सब अंबेडकर जयंती मनाते हुए संविधान को छोड़ सामुदायिक नियमों का पालन करें। आमीन। जय हिन्द।

पैसे के लिए बच्चन जैसे धूर्त सब कुछ बेच सकते हैं

प्रो. डा. दीप्ति गुप्ता

अमिताभ बच्चन जी, मुझे आप जैसे उम्रदराज़ और अच्छे -बुरे की समझ रखनेवाले को भी चेताना पड़ेगा.... ?

क्या आप नहीं जानते कि "पान मसाला"- "तम्बाकू" जैसी जानलेवा चीज़ का ही छद्म रूप है । क्या आप नहीं जानते कि तम्बाकू हमेशा से सेहत के लिए हानिकारक बताया गया है ।

आमजनता जानकारी के अभाव में इसके सेवन से बाज़ न आती हो, पर आप तो इसकी लत मत लगवाइए। क्योंकि आमजन Hero worship से ग्रस्त होता है । जो लोग पान मसाला नहीं भी खाते है वे आपका विज्ञापन देखकर, आपकी Hero worship में इसे खाने लगे और वे अनेक तरह के जानलेवा कैंसर का शिकार हो गए हैं ।

कुछ युवाओ को मैंने टोका कि आप सेहत के लिए नुकसानदेह यह मसाला खाते हो ?

वे तपाक से बोले "अमिताभ जी का विज्ञापन देखकर, हमने खाना शुरू किया।"

जनहित में सरकार द्वारा लम्बे समय से तम्बाकू को प्रतिबन्धित कर दिया गया है। ऐसा होने पर, धन के लोभी व्यवसायियों ने उसे पान मसाला, गुटखा आदि इन छद्म नामों से बेचना शुरू कर दिया ।

बच्चन जी, आप एक उम्रदराज़ और परिपक्व इंसान हैं । आपको जनहित मे, समाज-हित और देश-हित में, आम आदमी की सेहत के लिए हानिकारक प्रोडक्ट का विज्ञापन करने से पहले हज़ार बार सोचना चाहिए कि जिस वस्तु का विज्ञापन कर, आप अरब-खरबपति होते हुए भी उसकी बिक्री को बढ़ावा दे कर, धन कमा रहे हैं, वह मानवीय और सामाजिक सरोकारों के सन्दर्भ में नैतिकता और इंसानियत की दृष्टि से देशवासियो के लिए कितना नुकसानदेह और जानलेवा है.....!!!

अफसोस के आपको जीवन के तमाम अनुभवो के बावजूद भी यह नही पता कि वर्षों से (गुटखा), आप जिस स्वास्थ्य विरोधी पान मसाले का विज्ञापन करते आ रहे हैं, उसके सेवन से लोगों को मुंह, गले, फेफड़े, भोजन- नली, गुर्दा, पैनक्रियाज आदि का कैंसर हो जाता है। और यदि बच्चन जी, आपको इस बात की जानकारी है, उसके बाद भी आप "पान मसाले" का विज्ञापन कर रहे है, सिर्फ इस लोभ में कि उससे आपको "धन" मिलता है, तो एक सजग नागरिक होने के नाते, मैं आपकी इस घटिया सोच की मैं भर्त्सना करती हूँ ।

अमिताभ जी, आप हमारे देश के एक प्रतिष्ठित और सम्मानित अभिनेता हैं, आपको इस तरह के स्वास्थ्य - विरोधी, जनविरोधी और समाज-विरोधी प्रोडक्ट का विज्ञापन करना शोभा नहीं देता । यह आपकी छवि को ही "धूलधूसरित" नही करता, अपितु आपकी नैतिकता पर भी सवाल खड़े करता है ।

जनहित में आपसे निवेदन है कि आप पान मसाला का विज्ञापन करना बन्द कर दीजिए और जनता को सही दिशा दीजिए। सही दिशा न दे सकें, तो कम से कम ग़लत दिशा तो मत दीजिए । जनता को ऐसे धूर्त एवं लोभी लोगों के बहकावे में नहीं आना चाहिए।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।**
2. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन**
3. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।**
4. **जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207**
5. **राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794**
6. **मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919**
7. **सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421**

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर इसकी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या-451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112

Union Bank of India, Sector-7, Faridabad